1

नेहरू के राजनीतिक विचार

जब हम जवाहरलाल नेहरू के समाजवादी विचारों की चर्चा करते हैं तब हमें यह स्मरण होता है कि हम किसी सिद्धान्तवादी के विचारों का विश्लेषण नहीं कर रहे हैं वरन् महात्मा गाँधी की तरह कर्म में विश्वास रखने वाले व्यक्ति के विचारों की व्याख्या कर रहे हैं। नेहरू ने अपने समाजवादी विचारों का संकलन किसी एक स्थान पर नहीं किया है बल्कि उनके ये विचार राष्ट्रीय आन्दोलन के लम्बे काल में विभिन्न स्थानों पर दिए गए भाषणों तथा कुछ लिखावटों से प्राप्त होते हैं।

जब नेहरू ने अपना राजनीतिक जीवन प्रारम्भ किया तब उनके विचारों पर पूरब एवं पश्चिम की मिश्रित छाप थी। इंग्लैण्ड में, उनके विद्यार्थी जीवनकाल में फेबियन समाजवाद तथा मजदूर दल के श्रमवाद का काल था, किन्तु नेहरू इन विचारों और आन्दोलनों से प्रभावित नहीं हुए।

अतः राजनीतिक विचारों के प्रथम चरण में नेहरू उदारवाद में विश्वास करते थे तथा मनुष्य के व्यक्तित्व, व्यक्ति के अधिकारों, सामाजिक संबंधों में मानवतावाद तथा प्रजातान्त्रिक विचारों पर अधिक बल दिए।

~~नेहरू के Liberal democrat~~

नेहरू के Liberal democrat से मार्क्स के समाजवाद और फिर बाद में प्रजातान्त्रिक समाजवाद की ओर बदलने की कहानी अत्यधिक रोचक है। कैम्ब्रिज से लौटने के बाद वे भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में कूद पड़े। उत्तरप्रदेश और अन्य स्थानों में राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ-साथ Peasant movement भी चल रहा था। अतः नेहरू भी इस आन्दोलन में स्वाभाविक रूप से सम्मिलित हो गए किन्तु 1926-27 ई. के आस-पास वे

अत्यधिक प्रभावित हुए। इस काल में वे पश्चिमी यूरोप के कई समाजवादी विचारकों तथा एशिया के क्रान्तिकारी विचारकों को, जिनमें Ho chi Minh (हो-ची मिन्ह) एवं अन्य थे, के सम्पर्क में आये।

इतना ही नहीं अपने पिता के साथ उन्होंने सोवियत संघ का भ्रमण किया और वहाँ की उपलब्धियों से काफी प्रभावित हुए।

यूरोप से लौटने के बाद हम जवाहरलाल नेहरू के विचारों में महत्वपूर्ण परिवर्तन पाते हैं। प्रथमतः वे एवं उनके समान कुछ अन्य भारतीय पूँजीवादी प्रजातन्त्र के कार्यकरण से असन्तुष्ट थे। 1929-31 ई० की महान आर्थिक संकट ने नेहरू को संतुष्ट कर दिया था कि गरीबी, भुखमरी और बीमारी से संसार की रक्षा करने में पूँजीवादी प्रजातन्त्र सक्षम नहीं है। अतः वे दूसरी व्यवस्था की ओर मुड़े और स्वाभाविक रूप से उनका झुकाव सोवियत संघ की ओर गया।

द्वितीयतः, नेहरू एवं उनके समान अन्य व्यक्ति महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलाये जा रहे राष्ट्रीय आन्दोलन को अनुपयुक्त समझ रहे थे और इस सन्दर्भ में उनकी धारणा थी कि 1920-21 का असहयोग आन्दोलन तथा 1930-33 ई० का सविनय अवज्ञा आन्दोलन सिर्फ इसलिए असफल रहा कि प्रथमतः यह किसानों और मजदूरों द्वारा समर्थित आन्दोलन नहीं था। द्वितीयतः उनकी धारणा थी कि पूर्णरूपेण अहिंसक तरीके से राष्ट्रीय आन्दोलन चलाना उपयुक्त नहीं है।

तृतीयतः सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए नेहरू समाजवादी तरीके पर अधिक बल दे रहे थे। यदि प्रथम विश्वयुद्ध से पहले को नेहरू

नेहरू के विचारों का अध्ययन किया जाए तो उससे पता चलता है कि वे orthodox Marxist बन गए थे किन्तु यह कहना पर्याप्त सही नहीं है। नेहरू ने मार्क्स के समाजवाद की कुछ विशेषताओं को स्वीकार तो किया किन्तु उसके कुछ तत्वों की आलोचना भी की।

प्रथमतः विज्ञान के छात्र होने के कारण नेहरू को मार्क्स के जड़वादी दर्शन को समर्थन में कोई कठिनाई नहीं हुई।

द्वितीयतः, उसने मार्क्स के द्वन्द्वात्मक विचारों की प्रशंसा की किन्तु उसके सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में प्रयोग पर सहमति प्रकट नहीं की

तृतीयतः, जहाँ तक मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद की व्याख्या का प्रश्न है, उस पर नेहरू की धारणा थी कि यद्यपि मानव इतिहास में आर्थिक तत्व काफी महत्वपूर्ण तत्व है लेकिन यह एकमात्र निर्णायक तत्व नहीं है।

चतुर्थतः वर्ग और वर्ग संघर्ष के प्रश्न पर भी नेहरू मार्क्सवादियों से सहमत नहीं थे उन्होंने किसानों, मजदूरों और समाज के शोषितों के वर्ग संगठनों को पसन्द किया किन्तु इसलिए नहीं कि वे वर्ग संघर्ष करें अपितु इस उद्देश्य से कि वे अपने अधिकारों की रक्षा कर सकें तथा अपनी मांगों को प्रजातान्त्रिक तरीकों से प्रस्तुत कर सकें।

अन्त में नेहरू ने मार्क्स के राज्य संबंधी सिद्धान्त को भी शत-प्रतिशत स्वीकार नहीं किया यद्यपि वे इस बात से सहमत थे कि कुछ स्थितियों में राज्य के निर्णय और कार्य समाज के दलित वर्गों के विरुद्ध होते हैं किन्तु वे राज्य को किसी भी स्थिति में वर्ग शासन का अंग स्वीकार करने के पक्ष में नहीं थे।

इस प्रकार नेहरू न तो राज्य को समाप्त करने के पक्ष में थे और न सर्वहारा वर्ग की तानाशाही में विश्वास करते थे। एक ~~अलोकतान्त्रिक~~ प्रजातन्त्रवादी के रूप में वे एक व्यक्ति की तानाशाही के विचारों के विरुद्ध थे।

नेहरू महात्मा गाँधी के ~~अहिंसा~~ अहिंसक तरीकों में पूर्णरूपेण विश्वास नहीं करते थे किन्तु भारत के अन्य समाजवादियों की तरह वे हिंसक तरीकों की ओर नहीं झुके।

इस तरह यद्यपि ~~के~~ नेहरू एक समाजवादी बन गए थे किन्तु उनका समाजवाद एक निश्चित प्रकार का नहीं था इसे हम Pragmatic एवं impirical brand of Socialism कह सकते हैं क्योंकि ~~इ~~ इसका उद्देश्य निश्चित नहीं था बल्कि हमेशा विकासशील था

नेहरू के समाजवादी विचारों की व्याख्या तब तक अधूरी मानी जायेगी जब तक कि 1947 से 1964 (मृत्यु) तक के उनके विचारों का संक्षिप्त अध्ययन न किया जाए।

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व नेहरू ने समाजवाद के बारे में बड़े ही वक्तव्यपूर्ण ढंग ~~से~~ से भाषण दिए तथा लेख लिखे लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद बहुत लोगों को निराशा हुई जब देश के प्रधानमंत्री के रूप में, कांग्रेस के निर्विवाद नेता के रूप में तथा लाखों लोगों के स्नेह प्राप्त करने के बावजूद नेहरू देश में समाजवादी समाज की स्थापना के प्रश्न पर हिचकिचाहट प्रकट कर रहे थे।

नेहरू के समाजवादी विचारों के मूल्यांकन करने के संदर्भ में हमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना [illegible]

इस प्रकार नेहरू न तो राज्य को समाप्त करने के पक्ष में थे और न सर्वहारा वर्ग की तानाशाही में विश्वास करते थे। एक संवैधानिक प्रजातन्त्रवादी के रूप में वे एक व्यक्ति की तानाशाही के विचारों के विरुद्ध थे।

नेहरू महात्मा गाँधी के अहिंसक तरीकों में पूर्णरूपेण विश्वास नहीं करते थे किन्तु भारत के अन्य समाजवादियों की तरह वे हिंसक तरीकों की ओर नहीं झुके।

इस तरह यद्यपि नेहरू एक समाजवादी बन गए थे किन्तु उनका समाजवाद एक निश्चित प्रकार का नहीं था इसे हम Pragmatic एवं impirical brand of Socialism कह सकते हैं क्योंकि इसका उद्देश्य निश्चित निश्चित नहीं था बल्कि हमेशा विकासशील था।

नेहरू के समाजवादी विचारों की व्याख्या तब तक अधूरी मानी जायेगी जब तक कि 1947 से 1964 (मृत्यु) तक के उनके विचारों का संक्षिप्त अध्ययन न किया जाए।

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व नेहरू ने समाजवाद के बारे में बड़े ही वक्तव्यपूर्ण ढंग से लेख लिखे भाषण दिए तथा लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद बहुत लोगों को निराशा हुई जब देश के प्रधानमंत्री के रूप में, कांग्रेस के निर्विवाद नेता के रूप में तथा लाखों लोगों के स्नेह प्राप्त करने के बावजूद नेहरू देश में समाजवादी समाज की स्थापना के प्रश्न पर हिचकिचाहट प्रकट कर रहे थे।

नेहरू के समाजवादी विचारों के मूल्यांकन करने के संदर्भ में हमें निम्नलिखित कई बातों पर ध्यान देना होगा -

प्रथमतः, नेहरू किसी भी स्वीकृत समाजवादी विचारों के एक्सपर्ट नहीं थे उनके विचार सिर्फ अनुभव और Pragmatic पर आधारित थे अपने अनुभव के के आधार पर आधारित समाजवाद में वे कई चीजों से प्रभावित थे। वे मार्क्स तथा मार्क्सवादियों, फेबियन समाजवादियों तथा कई राष्ट्रीय क्रांतिकारी नेताओं के विचारों से प्रभावित थे, किन्तु वे किसी निश्चित विचारधारा के समर्थक नहीं थे।

द्वितीयतः, उनके समाजवाद की कोई निश्चित प्रक्रिया नहीं थी नेहरू हर हमेशा कहा करते थे कि मनुष्य अपने पसन्द के अनुकूल समाजवाद का निश्चय स्वयं करेंगे।

तृतीयतः, हमें यह याद रखना है कि यद्यपि नेहरू 1920 के अन्तिम चरण तथा 1930 के प्रथम चरण में समाजवादी हो गए थे किन्तु उनका प्रजातंत्र में सामान्य रूप से तथा अन्त तक विश्वास बना ही रहा इतना ही नहीं वे अन्तिम समय में व्यक्तिवाद ~~तथा~~ में विश्वास करते रहे। यह कारण है कि समाजवादी और साम्यवादियों द्वारा उनकी आलोचना की गई है।

नेहरू के विचारों पर महात्मा गांधी का प्रभाव भी एक महत्वपूर्ण तत्व है जिसे याद रखना आवश्यक है 1920 के अन्तिम चरण तथा 1930 के प्रारम्भ के चरण में जब नेहरू समाजवाद की चर्चा कर रहे थे, तो कई प्रश्नों पर उनके और गांधी में मतभेद दृष्टिगोचर हुए, किन्तु, उन मतभेदों के बावजूद दोनों के हृदय एक ही थे। महात्मा गांधी की मृत्यु के पश्चात नेहरू उनके विचारों को अधिक से अधिक पसन्द करने लगे। नेहरू ने मुख्य रूप से गांधी के साधन और साध्य में सामंजस्य के सिद्धान्त को महत्व दिया तथा इस प्रश्न पर हृदय ने उन समाजवादियों और साम्यवादियों की आलोचना की

6 जो सत्य को सबकुछ समझते थे और साधन को कुछ भी नहीं। गाँधी के विचारों से प्रभावित होकर नेहरु अब मनुष्य के नैतिक विकास पर बल देने लगे।

स्वतंत्रता प्राप्ति का तरीका भी एक दूसरा तत्व है जिसे याद रखना आवश्यक है। देश का विभाजन, साम्प्रदायिक दंगे तथा महात्मा गाँधी की हत्या से नेहरु काफी दुखी थे नैतिक और बौद्धिक रूप से वे काफी थक से गए थे और उन्होंने महसूस किया कि सामाजिक और आर्थिक नवनिर्माण के प्रश्न पर एक सच्चे राष्ट्रीय नेता के लिए, जनता की इच्छा और स्वभाव पर ध्यान देना आवश्यक है। नेहरु ने महसूस किया कि अभी देश तेजी के साथ समाजवाद की ओर जाने के लिए तैयार नहीं है।

इस प्रकार नेहरु का समाजवाद साम्यवादियों एवं अन्य समाजवादियों की राय में एक निश्चित ढंग पर नहीं था। यद्यपि आलोचकगण यह स्वीकार करते हैं कि समाजवाद की स्थापना इन दिनों में नहीं की जा सकती है, परन्तु उनकी धारणा है कि एक लम्बे काल तक शासन में रहने तथा जनता के निर्विवाद नेता होने के कारण नेहरु हमारी अर्थव्यवस्था को समाजवादी ढंग पर लाने के लिए बुनियाद रख सकते थे, किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। समाज पुराने तत्वों से नियंत्रित होता रहा और हमारी अर्थव्यवस्था सामन्तवादी पूँजीवादी तत्वों के नियंत्रण में बना रहा और यहाँ तक कि भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस भी समाजवादी विचारों से अछूता ही रही।

इन आलोचनाओं के बावजूद निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि बीसवीं शदी में नेहरु एक अत्यन्त ही आकर्षक व्यक्तित्व के थे जिन्हें भावी पीढ़ी हमेशा याद करती रहेगी।